साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

भयभीत मन

डॉ वीणा छंगाणी

"सुनो .....कुछ बात करनी थी आपसे सुधा ने झिझकते" हुए विजय से कहा।
"हां. .... हां... बोलो" विजय ने तेज चलती हुई घड़ी की ओर निकाह उठाते हुए कहा 'कुछ लाना है क्या बाजार से बताओ'
'नहीं नहीं कुछ नहीं बस एक बात करनी थी आपसे'

सुधा और विजय का विवाह हुए अभी ज्यादा समय नहीं बिता था सुधा की झिझक अभी पूरी तरह से खुली भी नहीं थी विजय से। 6,,,7 महीने होते ही कितने है एक दूसरे को समझने के लिए ।पहला महीना घर के रीति रिवाज निभाने में ही बीत गया तो कुछ समय सुधा अपने पीहर चली गई । विजय के साथ नए शहर में आकर नए घर को सेट करने मैं काफी समय निकल गया ।

सुधा का पीहर और ससुराल एक कस्बे में ही थे जहाँ पड़ोसी भी रिश्तेदारों की तरह रिश्ते निभाते हैं । दोनों का परिवार कश्मीर का होते हुए भी खुले विचारों वाला नई सोच रखने वाला परिवार था खुले विचारों से मतलब यह कदापि न था कि पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अंधी दौड़ में शामिल हो जाए ।

सुधा और विजय का संबंध भी दोनों की माताओं ने एक दूसरे की सहमति से ही किया था विजय एक होनहार पढ़ा-लिखा सुंदर और एक अच्छी नौकरी करने वाला सुशील लड़का था शहर में रहकर उसने अपनी पढ़ाई पूरी की थी लेकिन जिसे शहर की हवा लगना कहते हैं ऐसा कुछ भी विजय में नहीं था सुधा भी कस्बे में ही रहकर पढ़ी थी ।एक अच्छी प्रोफेशनल डिग्री उसने अपने ही कस्बे में रहकर पूरी की थी आत्मविश्वास से भरी हुई उस खुले विचारों वाली सुशील कन्या का विजय से संबंध होना एक अच्छा सहयोग था।

'क्या बात है जल्दी जल्दी बताओ सुधा मुझे टाइम पर ऑफिस पहुंचना पड़ेगा शादी के बाद पहली बार जा रहा हूँ । मजाक के अंदाज में ' तुम्हें पता है आजकल पढ़े

लिखे लोगों को भी अंगूठा लगाकर अपनी नौकरी की शुरुआत करनी पड़ती है कहीं देर ना हो जाए।'

'चलो छोड़ो बाद में कर लेंगे जब टाइम होगा तब बात करेंगे 'सुधा ने मुस्कुरा कर कहा। ' श्योर पक्का..... देखो बता दो कहीं बात भूल ही न जाओ मुझे अपना बैग उठाते हुए बोला ।विजय के दफ्तर जाने के बाद सुधा अपने घर के कामों में लग गई काम करते-करते सोचने लगी इस महीने और देख लेती हूं घर पर ही बैठकर काम करने का कोई जॉब मिल जाए तो मेरे लिए ठीक होगा अभी।

शादी की छुट्टियों के बाद विजय आज पहले दिन ही ऑफिस के लिए गया था । घर के छोटे-मोटे काम निपटा कर सुधा रिलैक्स मूड में सोफे पर बैठी ।TV को देख उसे ध्यान आया कितना शौक था उसे TV देखने का घर में हमेशा उसे डांट पड़ती थी दिन भर बैठे बैठे TV देखती रहती हो तुम बोर नहीं होती हो क्या।और अब कितना समय निकल गया TV की और नजर भी नहीं उठाई सुधा ने रिमोट हाथ में देकर TV ऑन किया TV ऑन होते ही न्यूज़ चैनल चल पड़ा' ओ हो यह तो पापा की पसंद का चैनल है वही देखते रहते हैं हमेशा 'सुधा को याद आया जिसके हाथ में रिमोट टीवी पर उसी का अधिकार ।

चलो आज मैं भी पापा की तरह न्यूज़ चैनल ही देखती हूं थोड़ी देर एक के बाद एक न्यूज़ देखते देखते सुधा चैनल बदलती रही फिर लगा लेटेस्ट न्यूज़ देखी जाए लेकिन न्यूज़ देखते देखते तो सुधा की रूह जैसे कांप उठी। यह क्या न्यूज़ है कठुआ में 8 साल की बच्ची से रेप .....और यह क्या.. एक बच्ची को टॉफी का लालच देकर उसका अपहरण कर लिया गया और फिर उसके साथ.....उन्नाव केस .....सौम्या केस ... सुधा को लगा जैसे यह सब उसी के साथ घटित हो रहा हो घर के बेडरूम में घुसकर रिश्तेदार ने 8 महीने की बच्ची के साथ..... तभी स्क्रीन पर ब्रेकिंग न्यूज़ चमकने लगी संत बाबा कहलाने वाले दरिंदे आसाराम को उम्रकैद नाबालिक से दुष्कर्म करने के कारण। सुधा ने घबरा कर चैनल बदल दिया ।उस चैनल पर भी वही एक शिक्षक ने अपने शिष्यों के साथ..... परेशान सुधा TV बंद करके अपने आप को संभालती हुई आंखें बंद कर सोफे के सिरहाने अपना सिर रखकर बैठ गई । मोबाइल में मैसेज आने की संकेत आवाज से आंखें खोली और मोबाइल उठा कर सोचने लगी ।शायद किसी ने कोई वीडियो भेजा था चलो इसी को देखा जाए तो शायद मन बहल जाए, सोचकर सुधा ने वीडियो डाउनलोड करना शुरू किया वीडियो तेजी से डाउनलोड हो भी गया। पर वहां भी

वही 10 मिनट के वीडियो में दिखाया जा रहा था कि एक चौकीदारनुमा आदमी लिफ्ट में दो छोटी छोटी बच्चियो से छेड़खानी कर रहा हैं बच्चियां लिफ्ट से बाहर निकलने की कोशिश कर रही है लेकिन वह बार बार लिफ्ट का दरवाजा बंद करके मैं बाहर निकलने नहीं दे रहा काफी देर परेशान करने के बाद बड़े ही शरीफाराना अंदाज से बाहर निकलता है और अपनी राह चल देता है बच्चियां ठगी सी सहमी सी खड़ी रह जाती है।

तभी बजती हुई मोबाइल की घंटी ने सुधा का ध्यान तोडा।
'हेलो सुधा क्या कर रही हो'
' कुछ नहीं बस यूं ही'
' तुम कुछ कहना चाह रही थी ना '
कह दो मोबाइल पर ही बता दो। कोई नहीं सुन रहा कोई मेरे आस-पास नहीं है' विजय आराम के मूड में था ।
'नहीं नहीं शाम को ही बात करते हैं' सुधा अंदर ही अंदर घबरा सी गई थी।
' चलो शाम को मिलते हैं'

विजय का फोन डिसकनेक्ट हो चुका था लेकिन सुधा के विचार अभी भी तेजी से आ जा रहे थे वह सोच रही थी शाम को जब विजय उसे पूछेगा तो क्या जवाब देंगी मैं तो उन्हें खुशखबरी देना चाहती थी पर पर क्या जो खबर में उन्हें दूंगी वह खुशखबरी होगी या भयानक भविष्य का एक संकेत।

फिर मन ही मन कुछ सोच कुछ निश्चय करने के अंदाज में खुद पर खुद बोली हां यही ठीक होगा मुझे यही करना चाहिए मुझे यही करना होगा। पर यह तो पाप होगा ना अंतर से सुधा को सुधा की ही आवाज सुनाई दे रही थी।

होगा पाप तो होने दो अभी एक बात कर लूंगी तो भविष्य में बहुत बड़े पाथप को होने से बचा लूंगी सुधा का दिमाग इसी उधेड़बुन में उलझता रहा सुलगता रहा कब शाम हो गई पता ही न चला दरवाजे की घंटी ने सुधा की तंद्रा को तोड़ दिया ।
विजय ऑफिस से आया था सुधा को परेशान सी हालत में देख कर उसे कुछ अजीब सा लगा 'क्या बात हो गई कुछ परेशान सी लग रही हो'

' नहीं ऐसी कोई बात नहीं' सुधा ने अपनी परेशानी को छुपाने की कोशिश की।

‘ अच्छा चलो बताओ ऐसी क्या बात थी जो तुम मुझे सुबह बताना चाह रही थी’ विजय आराम से स्थिति में सोफे पर बैठ गया।

सुधा पास ही सोफे पर बैठ गई उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था ।विजय को पूरी तरह समझ में आ गया था कि बात कुछ गंभीर है जो सुधा बोल नहीं पा रही है।

‘बोलो क्या हुआ है, ,, कुछ गंभीर बात तो नहीं ‘विजय बहुत चिंतित हो रहा था ।‘ वो मैं बताना चाह रही थी कि मैं,,,, मैं,,,,,, मां बनने वाली हूं’।‘

विजय स्तंभ सा रह गया फिर खुशी के मारे उछल पड़ा ‘अरे यह तो बहुत बड़ी खुशखबरी है तुम बताने में इतना टाइम क्यों ले रही हो सुधा तुम भी गजब करती हो”

“ मां को बताया कितनी खुश होगी वह,,, नहीं बताया होगा पक्का..... तुमने नहीं बताया होगा मुझे बताने में इतना टाइम ले लिया..... चलो कोई नहीं मैं ही फोन करता हूं .....माँ को ‘ विजय खुशी में डूबा हुआ अपनी धुन में लगातार बोले जा रहा था फिर जेब से मोबाइल निकालकर नंबर डायल करने लगा।

‘ नहीं ,,,नहीं ,,,अभी नहीं “विजय के हाथ से मोबाइल को छिनते हुए सुधा ने कहा। सुधा घबरा गई थी।
‘ क्यों अभी क्यों नहीं इतनी बड़ी खबर अभी क्यों नहीं’
“नहीं मैं सोच रही थी कि पहले एक बार हम डॉक्टर से मिल ले कंफर्म कर ले फिर’
‘क्यों तुम्हें कंफर्म नहीं है क्या ‘
‘ऐसी बात नहीं है। कंफर्म तो है मैंने चेक करवा लिया था। ‘ सुधा ने झिझकते हुए कहा।
‘फिर क्या कंफर्म करना है सुधा ‘विजय कुछ असमंजस में था।
‘मैं पहले डॉक्टर से मिलना चाह रही थी’
‘हाँ तो मिलेंगे ना तुम्हारे स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना पड़ेगा डॉक्टर से मिलना ही है मैं सोच रहा हूं मां को यहीं बुला लेता हूं तुम्हारा पूरा ख्याल रखेंगी।
‘नहीं यह बात नहीं है बात कुछ और है’
‘तो फिर ऐसा क्या है जो तुम इतना परेशान हो ‘
वो मैं चाह रही थी ,,,,,,, मैं चाह रही थी कि पता कर लूं कि लड़का है या लड़की।
‘ क्या,,,,, क्या,,,, क्या चाह रही थी,,,, तुम चाह रही हो कि पता कर लो कि लड़का है या लड़की’ विजय ठहाका मारकर हंस पड़ा।‘
हां मुझे पता करना है’ सुधा ने दृढ़ निश्चय के अंदाज में कहा।

‘ अरे क्या फर्क पड़ता है लड़का हो या लड़की ,कोई भी हो हमें तो नए मेहमान का इंतजार है’ विजय ने सुधा के हाथ से मोबाइल लेते हुए कहा।
‘नहीं विजय, मुझे लड़की नहीं चाहिए‘सुधा ने जैसे अपना निर्णय दे दिया हो।
‘यह क्या पागलपन है तुमने जमाने की लड़की ऐसी सोच लेकर चलोगी तो दूसरे क्या करेंगे तुम्हारे दिमाग में आया कैसे ये सब ।जहां तक मेरा ख्याल है तुम्हारे परिवार में भी ऐसी सोच नहीं पनप रही और तुम लड़की होकर भी लड़की नहीं चाहती ! क्यू। ,,,,बोला क्यूँ ।
‘ ऐसी बात नहीं है मुझे बहुत प्यारी है लड़कियाँ, गुड़िया सी बिटिया किसको पसंद ना होगी ।मैं भी चाहती हूं मेरी बेटी हो और मैं उसे बड़े प्यार और जतन से पाल पोस कर बड़ा करूँ ।बेटी ही तो होती है जो मां बाप के सुख दुख में उम्र भर से भागी होती है घर में कोई लड़की ना हो तो सूना सूना सा ही रहता है साल भर के त्यौहार रीति रिवाज परंपराएं लड़कियों से ही तो शोभित होती हैं ।मैं भी चाहती हूं मेरी भी इच्छा है मेरी भी एक बेटी हो।..... लेकिन अब मैं नहीं चाहती मुझे बेटी नही चाहिए ।’’फूट-फूट कर रोने लगी मुझे कुछ समझ नहीं पा रहा था पास आकर बोला फिर ऐसी क्या बात हो गई सुधा तुम अचानक ऐसा कुछ सोचने लगी। सुधा ने अपने आंसू पोछे और पास में पड़े रिमोट से टीवी को शुरू किया न्यूज़ चैनल पर अभी भी दुष्कर्मी दरिंदे आसाराम की खबरें आ रही थी। देखा आपने हर चैनल पर एक ही समाचार। आसाराम की बात करते-करते उन्नाव के कठुआ के सोम्या केस निर्भया केस और न जाने कितने कितने भयानक किस्से ।फिर चैनल बदलते हुए ‘ चलो माना कि दूसरे तो विकृत मानसिकता वाले लोग हैं लेकिन संत और बाबा भी इसमें कैसे शामिल हो गए वह संत कहा जाने वाला आसाराम और वह राम रहीम।“ विजय कुछ कहना चाह रहा था लेकिन सुधा ने बीच में रोते हुए कहा’ यह सब तो घर के बाहर होने वाली घटनाएं है, घर में घुसकर 8 महीने की बच्ची से,,,,,,,,,,, सुधा का पूरा शरीर कांप रहा था कुछ बोलने की हालत में नहीं थी सुधा । विजय ने बोतल से पानी निकाला और सुधा को पिलाया। विजय मुझे बच्चे बहुत प्यारे हैं विजय मैं नहीं चाहती कि भविष्य मेरी बेटी के साथ यह सब हो।“ विजय आश्चर्य से सुधा का चेहरा देखखने लगा

मैं इस दरिंदों की दुनिया में अपनी बेटी को जन्म नहीं देना चाहती विजय की बड़ी विकट हो चुकी थी सुधा को समझाते हुए बोला माना की सारी घटनाएं किसी को भी हिला देने के लिए काफी है पर हम को अपनी मानसिकता बदलनी होगी समाज में बेटियों को सम्मान दिलाना होगा हमें अपने बेटों को सिखाना होगा की बच्चियों की इज्जत कैसे की जाए यह सब करने के लिए किसी न किसी को तो आगे आना ही

पड़ेगा ना सुधा फिर हम से शुरुआत क्यों ना हो हम अगर हिम्मत हार गए तो इस संसार में हमारी बेटियां कभी जन्म नहीं ले पाएगी समाज अपने दकियानूसी सोच के कारण दहेज की बढ़ती मांग को लेकर देशों मासूम बच्चों को मार्स आया है तुम क्या चाहती हो इस घटिया सोच में एक और घटिया कृत कृति करके हम भी उसी सोच में शामिल हो जाए नहीं सुना सुधा हमें ऐसा नहीं करना चाहिए हम ऐसा नहीं करेंगे करेंगे हमें गुलाब की तरह कांटों के बीच खेलना है और समस्याओं का समाधान करना है ना कि उसे भागना है मुझे की बातें सुनकर सुधा का जैसे खोया हुआ आत्मविश्वास लौट आया फिर मुड़ कर दो फिर से मोबाइल उठाते हुए मुझे के हाथ में देते हुए सुधा बोली मां को फोन कर रहे थे ना खुशखबरी देनी है ना मां को।।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें